हिन्दी कार्यशाला

विषयः कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग संबंधी व्यावहारिक समस्याएं व समाधान

दिनांक 29.11.2010

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में दिनांक 29 नवंबर, 2010 के अपराह्न 2.30 बजे "कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग संबंधी व्यावहारिक समस्याएं व समाधान" विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक श्री एन. के. वासु जी ने की। कार्यशाला में संस्थान की समूह समन्वयक (अनुसंधान) श्रीमती एम्तिएन्ला आओ, युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, जोरहाट के प्रबंधक (राजभाषा), पाण्डेय ए. के. अरुण जी, संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थें। कार्यशाला का शुभारंभ अतिथि वक्ता के सम्भाषण एवं संक्षिप्त परिचय से किया गया। संस्थान के कार्यकारी हिन्दी अधिकारी श्री आलोक यादव ने अतिथि वक्ता का स्वागत किया। इसके बाद झूम खेती प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री पवन कुमार कौशिक ने कार्यशाला का उद्देश्य एवं प्रारुप पर संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। अतिथि वक्ता श्री पाण्डेय ए. के. अरुण जी ने अपने व्याख्यान के दौरान कार्यालय में हिन्दी में काम करने में आ रही समस्याओं के बारे में विस्तृत रुप से चर्चा की तथा इसके समाधान के उपाय भी सुझाए। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि अनुसंधान लेखों को छोड़ सामान्य प्रशासनिक कार्यों में औसतन 25 से कम शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यदि प्रत्येक कर्मचारी प्रतिदिन कम से कम दो शब्दों का प्रयोग करना सीख ले तो उसका आवश्यक शब्दभंडार माह भर में ही पूरा ही सकेगा और अतिशीघ्र हिन्दी में काम करने में आसानी होगी। हिन्दी में काम करना कठिन होता है और अंग्रेजी में आसान – यह बात भ्रामक बताते हुए पाण्डेयजी कहते हैं कि प्रयास शुरू करते ही हिन्दी में काम करना आसान हो जाता है। कार्यालय में सामान्यतः प्रचलन में हिन्दी का शब्दभंडार सीमित है। उन्होंने हिन्दी के प्रयोग में लिंग निर्णय की समस्या का समाधान को बहुत ही सरल एवं व्यावहारिक ढंग से समझाया तथा प्रतिभागियों के विभिन्न प्रश्नों का निराकरण भी किया।

कार्यशाला के दौरान उपस्थित संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी

व्याख्यान के उपरान्त अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में पाण्डेय जी को धन्यवाद देते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रति कानुनी एवं संवैधानिक दायित्व के बारे में सबको अवगत कराया। उन्होंने संस्थान में हो रहे हिन्दी की गतिविधियों पर सन्तोष व्यक्त करते हुए सबकी सराहना की। अंत में जैव पर्वेक्षण एवं स्वदेशी ज्ञान प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री राजीब कुमार कलिता के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।